शोध-लेख: कुन्तलगढ़ दुर्ग का वास्तविक इतिहास और मूल मीणा संप्रभुता

संदर्भ ग्रंथ: जयपुर राजकीय प्रकाशन (1909) - *His Highness The Maharaja Of Jaipur In Connection With The Visit Of His Excellency The Earl Of Minto, Viceroy And Governor General Of India.*
संकलनकर्ता: मोहर सिंह मीणा
(मीणा आदिवासियों का इतिहास)

---

१. प्रस्तावना **(Introduction)**

राजस्थान के मध्यकालीन इतिहास की मुख्यधारा की पुस्तकों में केवल उन्हीं राजवंशों और दुर्गों को प्रमुखता दी गई है जिन्होंने उत्तर-मध्यकाल में शासन किया। इस प्रक्रिया में ढूँढाड़ (जयपुर और आसपास के क्षेत्र) के उन प्राचीनतम सामरिक दुर्गों को हाशिए पर डाल दिया गया जो इस भूमि के मूल संरक्षकों द्वारा निर्मित थे। जयपुर के उत्तर-पश्चिम में अरावली की दुर्गम पहाड़ियों पर स्थित कुन्तलगढ़ का किला इसका सबसे प्रत्यक्ष उदाहरण है।

२. ऐतिहासिक साक्ष्य: जयपुर राजकीय गजट **(1909)**

सन 1909 में भारत के तत्कालीन वायसराय और गवर्नर जनरल लॉर्ड मिन्टो के जयपुर आगमन पर जयपुर रियासत द्वारा एक आधिकारिक ऐतिहासिक विवरणिका प्रकाशित की गई थी। इस सरकारी दस्तावेज के पृष्ठों पर दर्ज शब्द कुन्तलगढ़ के मूल इतिहास को पूरी तरह स्पष्ट करते हैं:

> "शहर के उत्तर-पश्चिम में, पहाड़ी की चोटी पर स्थित एक दिलचस्प किला ध्यान देने योग्य है... प्रचलित परंपरा है कि यह किला, जिसका नाम कुन्तलगढ़ था, राजपूतों के इस क्षेत्र में आने से पहले मीणाओं का गढ़ था।"

यह आधिकारिक स्वीकारोक्ति इस बात का अकाट्य प्रमाण है कि कछवाहा राजवंश के आगमन और आमेर साम्राज्य की स्थापना से बहुत पहले, यह संपूर्ण पहाड़ी क्षेत्र एक सुदृढ़ मीणा गणराज्य और सैन्य छावनी के रूप में संचालित था।

३. नामकरण का मिथक और जीर्णोद्धार का सच

मुख्यधारा के इतिहास में इस दुर्ग का श्रेय कछवाहा शासक दूलह राय के चौथे वंशज राजा कुंतल (13वीं शताब्दी) को दिया जाता है। लेकिन 1909 का सरकारी रिकॉर्ड इस ऐतिहासिक विरूपण को स्पष्ट रूप से सुधारता है:

- मूल संरचना: दुर्ग की रणनीतिक नींव, मजबूत प्राचीर और सुरक्षा चौकियां कछवाहा काल से सदियों पुरानी हैं और मूल रूप से मीणा शासकों द्वारा निर्मित हैं।
- आधिपत्य और पुनरुद्धार: राजा कुंतल ने इस क्षेत्र पर अधिकार करने के बाद केवल इस पूर्व-निर्मित किले में कुछ आंशिक जीर्णोद्धार या निर्माण कार्य करवाए थे। इसके पश्चात, राजनीतिक प्रभाव के तहत इस प्राचीन मीणा गढ़ का नाम बदलकर 'कुन्तलगढ़' रख दिया गया।

४. पुरातात्विक साक्ष्य: मैवासी बस्ती के अवशेष
इतिहास केवल कागजी दस्तावेजों में नहीं, बल्कि जमीन पर मौजूद अवशेषों में भी जिंदा रहता है। 1909 के राजकीय प्रकाशन में स्पष्ट उल्लेख है: "...इस परंपरा की संभावना को बल देने के लिए, किले के नीचे एक मैवासी या मीणा बस्ती के अवशेष भी मौजूद हैं।"

यहाँ 'मैवासी' शब्द का संदर्भ अत्यंत महत्वपूर्ण है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में मैवासी उन स्वतंत्र, लड़ाकू और संप्रभु मीणा समुदायों को कहा जाता था जिन्होंने कभी भी बाहरी या औपनिवेशिक ताकतों की अधीनता स्वीकार नहीं की और अपने पहाड़ी दुर्गों से लगातार कड़ा प्रतिरोध जारी रखा। किले की तलहटी में इस प्राचीन बस्ती के भौतिक अवशेष आज भी इस बात की गवाही देते हैं कि यह केवल एक सैन्य किला नहीं, बल्कि एक जीवंत मीणा सभ्यता का केंद्र था।

५. निष्कर्ष (Conclusion)
कुन्तलगढ़ का किला और उसकी तलहटी में बिखरे मैवासी अवशेष यह साबित करने के लिए पर्याप्त हैं कि प्राचीन भारतीय इतिहास और स्थापत्य कला की जड़ें मूल-निवासी मीणा (मत्स्य) राजवंशों से गहराई से जुड़ी हुई हैं। जयपुर सरकार का 1909 का यह आधिकारिक रिकॉर्ड औपनिवेशिक और मध्यकालीन पूर्वाग्रहों को पूरी तरह ध्वस्त करता है। यह समय की मांग है कि मुख्यधारा के अकादमिक इतिहास में कुन्तलगढ़ को उसके मूल स्वरूप—"मीणाओं के प्राचीन गौरवशाली गढ़"—के रूप में पुनर्स्थापित किया जाए।

☐